अध्याय चतुर्थ

प्रदत्त का विश्लेषण एवम् व्याख्या

अध्याय चतुर्थ
प्रदत्त का विश्लेषण एवम् व्याख्या

४.१ प्रस्तावना

इस शोध अध्धयन का उददेश्य है कि समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति का अध्धयन।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों कि जागरूकता और अभिवृत्ति को ज्ञान करने के लिए समावेशी शिक्षा से संबंधित कुछ कथनों को तैयार किया गया जिसके आधार पर प्रदत्त का संकलन किया गया।

प्रस्तुत अध्याय में कुल 3 परिकल्पाएं की गई है जिसकी जांच करने के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई है।

४.२ परिकल्पना का विश्लेषण

परिकल्पना के आधार पर प्रदत्त का विश्लेषण किया गया जो निम्न प्रकार से है :

परिकल्पना १

समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यालय प्रबंधन के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु काई वर्ग सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया गया है।

क्रमांक	विद्यालय के प्रकार	शिक्षकों की संख्या
१	अशासकीय	५०
२	शासकीय	५०

Type Of Schools	No. of Teachers
Govt	50
Private	50

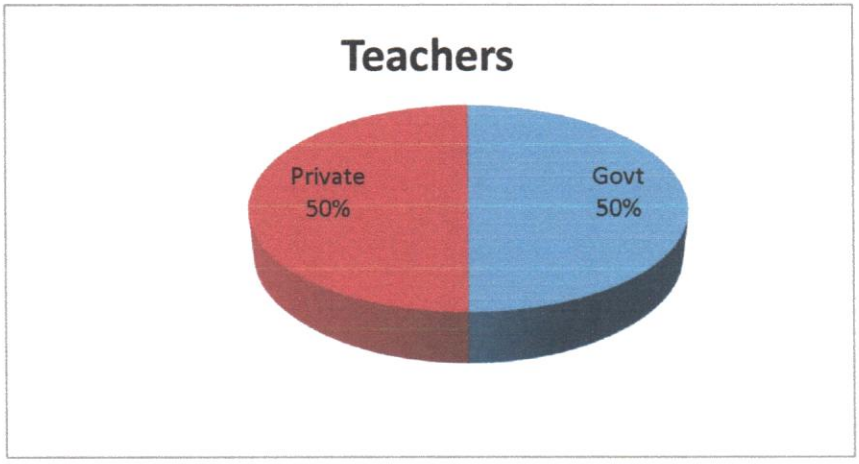

Table 1

Observed value

Type Of School	Fully Agree	Agree	Uncertain	Not Agree	Fully Not Agree	Total
Govt	16	11	9	6	8	50
Private	10	8	12	13	7	50
Total	26	19	21	19	15	100

स्पष्टीकरण

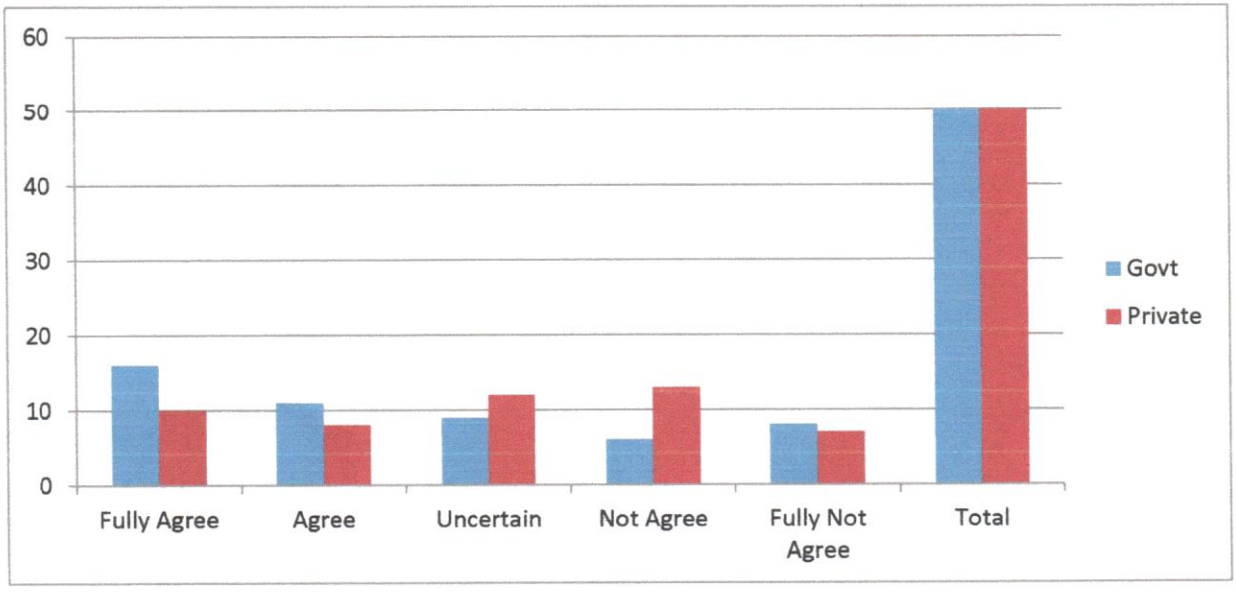

शासकीय विद्यालय के प्राथमिक शिक्षकों एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों का मान ४.९३ जो कि काई वर्ग ०.०५ पर ९.४९ जो कि प्राप्त काई वर्ग से कम है अर्थात् सार्थक नहीं है इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः समावेशी शिक्षा के प्रति शासकीय विद्यालय के प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति अशासकीय विद्यालयों एवं अशासकीय विद्यालयों के प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

- समावेशी शिक्षा के प्रति प्रबंधन के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
- समावेशी शिक्षा के प्रति शासकीय विद्यालय के प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति अशासकीय विद्यालय के समान इसलिए हो सकती है क्योंकि आधुनिक समय में सभी शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक है।
- अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षकों की जागरुकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 2

समावेशी शिक्षा के प्रति लिंग के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु काई वर्ग सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया गया है।

क्रमांक	लिंग	शिक्षकों की संख्या
१	पुरुष	३८
२	महिला	६२

Gender	Teachers
Male	38
Female	62

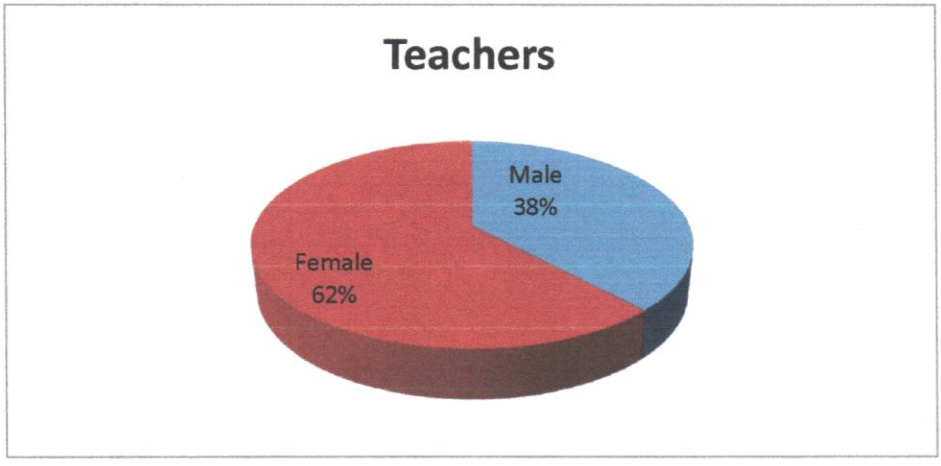

स्पष्टीकरण

महिला एवं पुरुष प्राथमिक शिक्षक की की जागरूकता का मान ४.९२ जो कि काई वर्ग ०.०५ पर ९.४८ से कम है अर्थात् सार्थक नहीं है अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है अर्थात् लिंग के आधार पर जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। लिंग के आधार पर समावेशी शिक्षा के

प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं है परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

लिंग के आधार पर समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समावेशी शिक्षा में महिला या पुरुष शिक्षक हो उसकी जागरूकता और अभिवृत्ति पर इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि आज के समावेशी शिक्षा में सभी जागरूक है। लिंग का जागरूकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

परिकल्पना ३

समावेशी शिक्षा के प्रति प्रशिक्षण के आधार पर प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु काई वर्ग सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया गया है।

क्रमांक	प्रशिक्षण	शिक्षकों कि संख्या
१	प्रशिक्षित	६५
२	अप्रशिक्षित	३५

Skilled	Teachers
Trained	65
Untrained	35

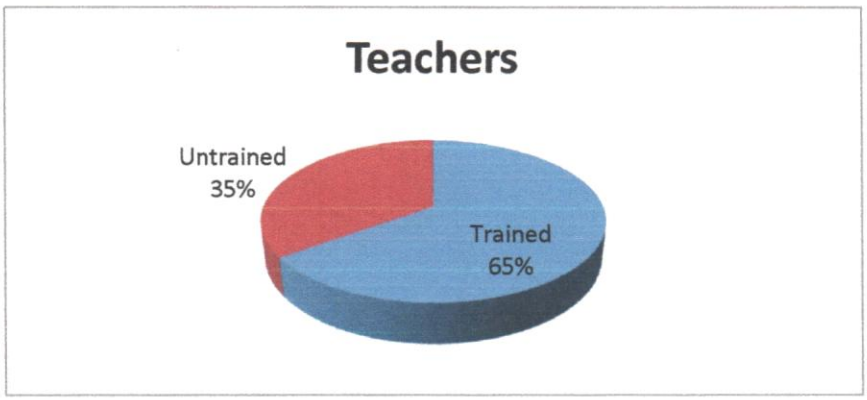

Table 3						
Observed value						
Skilled	Fully Agree	Agree	Uncertain	Not Agree	Fully Not Agree	Total
Trained	25	11	6	10	13	65
Untrained	7	6	9	8	5	35
Total	32	17	15	18	18	100

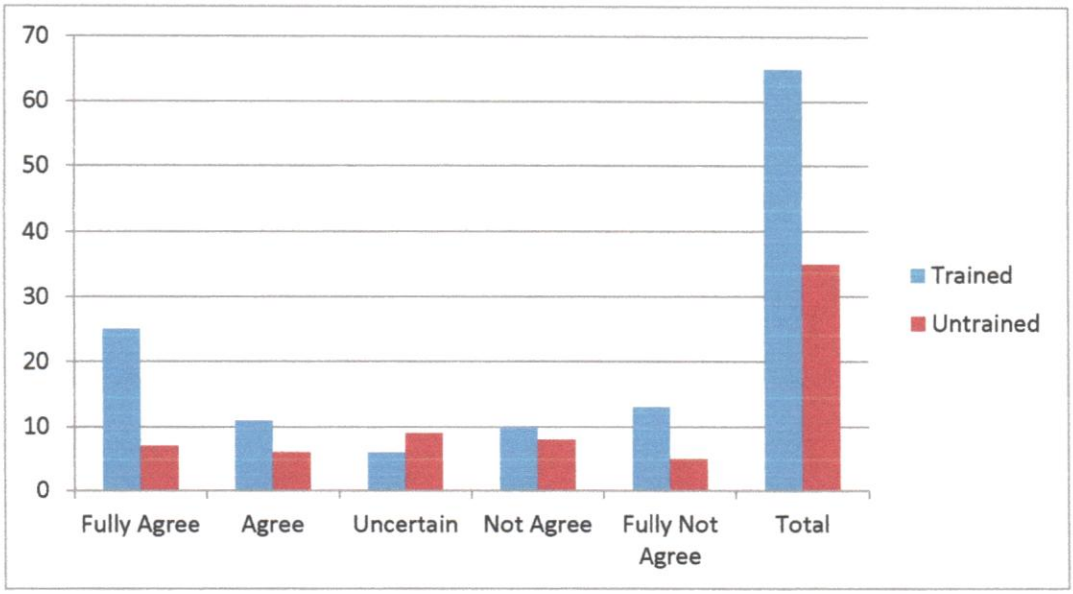

स्पष्टीकरण

काई वर्ग का ज्ञात मान ७२.५७ जो कि काई वर्ग ०.०५ पर ९.४९ है जो कि दिए गए मान से अधिक है अर्थात् सार्थक हैं अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् प्रशिक्षण के आधार पर प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। अतः प्रशिक्षण के आधार पर समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष

प्रशिक्षण के आधार पर समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक की जागरूकता और अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार यह कह सकते है प्रशिक्षण का समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षक जागरूक होते है क्योंकि शिक्षक बनने हेतु उन्हें प्रशिक्षण में समावेशी शिक्षा का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त होता है तथा वे अपने शिक्षण में इसका प्रयोग करते है।